कवि दृष्टिः नारी दृष्टि

डॉ० शुभा माहेश्वरी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्ययन, हिन्दी विभाग
साहू जैन कॉलेज, नजीबाबाद
ईमेलः maheshwari.shubha@gmail.com

सारांश

हिंदी काव्य में आदि काल से ही कवियों ने नारी को अपने काव्य में पर्याप्त स्थान दिया है। अपभ्रंश साहित्य में नारी को मात्र भोग्या रूप में ही प्रस्तुत किया गया। रासो काव्य परंपरा में क्षात्र धर्म से ओतप्रोत दुर्गा स्वरूप को भी दर्शाया गया है। निर्गुण भक्ति धारा के संत कवियों नेआत्मा को नारी और ब्रह्मा को प्रीतम के रूप में देखा है। प्रेमाख्यानक काव्यों की नारी कल्याण और सत् की विधायिका है। वह अलौकिक रूप में परम शक्ति, ज्योति, साधक की साधना और भक्ति की पात्रा है तो लौकिक पक्ष में अबला के रूप में ही चित्रित की गई है। तुलसी की नारी लोक कल्याण की भावनाओं से परिपूर्ण है, तो सूर की नारियों के विविध रूप हैं। मीरा के प्रणय का केंद्रीय भाव आत्मसमर्पण है। केशव की सीता राम की रानी तथा जीवनसंगिनी है। आचार्य चिंतामणि, कुलपति मिश्र, मतिराम या देव, सभी रीतिबद्ध कवियों की नारी प्रेम में डूबी परंपरागत कवियों की नारी है। बिहारी ने नायक और नायिका के संयोग और वियोग दोनों पक्ष लिए हैं। रीति काल में नारी का रसिक रूप ही मुखरित हुआ है। भारतेंदु युग में भारतेंदु, श्री बद्रीनारायण चौधरी, प्रताप नारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त आदि कवियों की दृष्टि नारी के दीन, दुखी और निराश्रित रूप से देख पाई है। द्विवेदी युग में प्रथम बार सभी नारी पात्रों की सृष्टि नारी के समाजसेवी व विश्व कल्याणकारी रूप को प्रतिष्ठित करने के लिए की गई है। मैथिलीशरण गुप्त, पंडित द्वारिका प्रसाद मिश्र, सोहनलाल द्विवेदी कवियों ने नारी को शक्ति रूपा तथा

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण
निम्न प्रकार हैः

डॉ० शुभा माहेश्वरी

कवि दृष्टिः नारी दृष्टि

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 184–191

Article No. 29
http://
anubooks.com?page_id=581

देश प्रेम, समाज प्रेम, विश्व प्रेम आदि गुणों से युक्त पाया है। प्रसाद की नारी पुरूष की प्रेरणादाई शक्ति तथा पथ प्रदर्शिका है, तो निराला की वेदना, संयम की मूर्ति है। पंत की नारी सर्वगुण संपन्न, पावन शक्ति व सौंदर्य की मूर्ति है, तो महादेवी की नारी चिरंतन सुहागिनी। दिनकर की नारी शक्ति से परिपूर्ण है। बच्चन, नरेंद्र शर्मा, त्रिलोचन, केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन आदि प्रगतिवादी कवियों ने नारी को पुरूष की संगिनी के रूप में देखा है।

प्रयोगवाद और नई कविता में अज्ञेय, धर्मवीर भारती, दुष्यंत, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, मुक्तिबोध, लीलाधर जगूड़ी, उदय प्रकाश, राजेश जोशी, ऋता शुक्ल आदि के माध्यम से नारी के संघर्षों को, उसके अदम्य साहस, जूझने की दृढ़ता और जिजीविषा को विश्वसनीयता के साथ उकेरा गया है।

हिंदी के कवियों की दर्षष्टि नारी के प्रति सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्थितियों में परिवर्तन होने के साथ–साथ निरन्तर बदलती रही है।

मूल शब्द

- *आदि काल में नारी का भोग्या रूप।*
- *संत काव्य परंपरा में नारी अलौकिक प्रेम करने वाली 'दुल्हन' के रूप में।*
- *सूफी काव्यों में नारी अलौकि शक्ति के रूप में।*
- *सगुण भक्ति धारा में नारी के त्याग, समर्पण तथा शुद्ध प्रेम की पराकाष्ठा का चित्रण।*
- *रीतिकाल में नारी का रसिक रूप।*
- *भारतेंदु युगीन नारी असहाय, दीन, दुखी।*
- *द्विवेदी युगीन नारी समाज सेविका, विश्व हितैषिणी, आत्मसमर्पिता।*
- *छायावादी कवियों की नारी सौंदर्य और प्रेम की प्रतिमूर्ति, जीवन संगिनी, परोपकारी तथा समाज कल्याणी।*
- *प्रयोगवादी, नई कविता तथा अद्यतन कविता में नारी के विविध रूप (प्रेम, सौंदर्य, प्रेरक शक्ति, साहस, संघर्ष, जुझारूपन, उत्कट जिजीविषा)।*

नारी का लावण्य कला का ललाम भाव है। 1. अनन्त काल से ही नारी कला के ललाम रूप साहित्य का मुख्य प्राण एवं समाज की शक्ति रही है। समाज के बदलते मापदण्ड, विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवस्थाओं का विकास तथा नवीन आदर्शों की स्थापना नारी स्थिति के उत्थान–पतन के लिए उत्तरदायी रहे है। 2. हिन्दी काव्य में आदि काल से ही नारी को अपना प्रतिपाद्य विषय कवियों ने बनाया है। अपभ्रंश के आदि काव्य 'पउम चरिउ' में कवि स्वयंभू सीता को धैर्य एवं पवित्रता की प्रतिमूर्ति बताकर नारी जाति के प्रति अपने सम्मान को व्यक्त करते हैं, साथ ही राम द्वारा निर्वासित सीता को लक्ष्य कर नारी समाज के प्रति धिक्कारपूर्ण शब्दों का प्रयोग कर तत्कालीन पुरूष मानसिकता का परिचय भी देते हैं। अब्दुर्रहमान द्वारा रचित 'सन्देशरासक' में विरहिणी के हृदय की अनुभूतियों को सहज भाव से चित्रित किया गया है। समस्त अपभ्रंश साहित्य पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि कुछ अपवादों को छोड़कर अपभ्रंश साहित्य में नारी के मात्र भोग्या रूप में ही अधिक महत्व दिया गया है। सिद्ध साहित्य तथा नाथ साहित्य

में नारी के बाह्य सौन्दर्य का ही अधिक सर्जन है। रासो–काव्य परम्परा में नारी के उक्त रूप के अतिरिक्त स्वाभिमान एवं क्षात्र धर्म से ओत–प्रोत दुर्गास्वरूप के भी दर्शन होते है। चंदवरदायी कृत 'पृथ्वीराज रासो' में वीर पत्नी अपना जीवन व मरण पति के साथ ही मानती है– ''हम सुक्ख दुक्ख बंटन समथ्थ हम सुरंग वास छंडै न सत्थ''। 3. नरपति नाल्ह के 'वीसलदेव रासो की राजमती एक स्वाभिमानी, कुलीना गृहणी है। लेकिन कुल मिलाकर आदिकालीन साहित्य में नारी केवल भोग्या, प्रेमिका अथवा वीरता का पुरस्कार मात्र बनी रही। हिन्दी गीति परम्परा के प्रवर्तक विद्यापति ने भी नारी–सौन्दर्य एवं प्रेम को संसार की सार वस्तु मानते हुए उसे धर्म और मर्यादाओं से उच्च स्थान दिया। निर्गुण भक्ति धारा के संत कवियों ने अपने युग की विषम परिस्थितियों को समझते, परखते हुए नारी के कुत्सित रूप को दूर करने के लिए इन्द्रियों को जीतने की प्रेरणा दी। 4. संत कबीर ने भारतीय नारी की गम्भीर सम्वेदना, अटूट विश्वास, चिर स्थायी सम्बन्ध, कठोर पतिव्रता धर्म, मृदु मुस्कान और अधीर किन्तु संयत हृदय की वेदना लेकर भक्त के अनोखे व्यक्तित्व का प्रदर्शन अपनी 'साखियों' में किया है। संत दादूदयाल, चरणदास, मलूकदास, दयाबाई सहजोबाई, धरनीदास आदि संतमार्गी धारा के अनेक कवियों ने अपनी कृतियों में नारी भावना पर प्रकाश डालते हुए आत्मा को नारी तथा ब्रहम को प्रीतम के रूप में देखा है। दादू जीवन मरण का मुझ पछतावा नाहिं मुझ पछतावा पीव का रह्या न नैनहुँ माँहि। 5. यद्यपि गरीबदास और रैदास ने नारी को 'नागिन सब जग डस लिया सत्गुरू करै सहाय'। 6. कहकर उसकी निंदा की है, तथापि समस्त संत साहित्य में नारी को घृणा की दृष्टि से नहीं, वरन् अलौकिक प्रेम करने वाली नायिका 'दुल्हन' के रूप में देखा गया। इन संतों ने पूर्व में अनैतिकता का केन्द्र बन चुकी नारी के प्रति जनमानस में त्याग की भावना उत्पन्न कर शोषित नारी को मुक्ति दिलाने का जो अत्यंत सफल एवं भव्य प्रयत्न किया, वह चिरस्मरणीय है। सूफी कवियों ने नारी को अनन्त का प्रतीक माना। उस्मान की 'चित्रावली', नूर मुहम्मद की 'इन्द्रावती' जायसी के 'पद्मावत' तथा मंझन की 'मधुमालती' आदि प्रेमाख्यानक काव्यों की नारी कल्याण तथा सत् की विधायिका हैं। वह अलौकिक रूप में परम शक्ति, ज्योति, साधक की साधना तथा भक्ति की पात्रा है देवता हाथ–हाळा पगु लेहीं, पगुपर जहाँ सीस तहँ देही। 7. लौकिक रूप में नारी पुरूष की प्रेयसी व पत्नी होते हुए उच्च आदर्शों से युक्त है ''अल्प मानसेवा अधिक, रिसि राखव जिउ' मारि, जेहि घर मंह में तीन गुन, सोइ सोहागिन नारि।'' 8. मौलाना दाऊद दलमई कृत 'चंदायन' की नायिका के सौन्दर्य का तथा कुतबन कृत 'मृगावति' की नायिका के आदर्श भारतीय स्त्री का चित्रण हमें मिलता है। कहीं–कहीं नारी के असत् रूप की झलक भी मिलती है, जैसे बादल की पत्नी क्षणिक दुर्बलता के कारण आदर्श से विमुख हो जाती है। सूफी कवियों की नारी लौकि पक्ष में अबला के रूप में ही विचित्र है। तुलसी की नारी का मानस लोक कल्याण की भावाओं से परिपूर्ण है। सीता का सौन्दर्य उनके सतीत्व, सहिष्णुता, त्याग एवं धैर्य का मूर्त रूप होने के कारण दिव्य है– रंग भूमि जब सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नरनारी। 9. तभी तुलसी भी असमर्थ हो जाते हैं–'सिव सोभा नहिं जाए बखानी।'मानस की उपनायिकाएं–पार्वती, कौशल्या, सुमित्रा, सुनयना, मैना तथा शबरी – सधर्म परायणा, बुद्धिमती, विवेकशीला तथा विशाल हृदय हैं। कैकयी कुटिला, कुबुद्धि कठोर तथा अभागी खलनायिका के रूप में विचित्र है। नारी सुलभ दुर्बलता के साथ उसके

सत् एवं असत् दोनों रूप विद्यमान हैं। अपने साहित्य में विभिन्न प्रसंगों में नारी जाति की निंदा करने के कारण तुलसी की साहित्य जगत् में कटु आलोचना भी हुई है। हिन्दी काव्य में सर्वाधिक लोकप्रिय चरित्र राधा कृष्ण–काव्यों की प्रिय एवं प्रमुख नारी है। सूर की त्यागमयी राधा 'लौकिकता तथा अलौकिकता की, प्रेम तथा सन्यास की,, स्नेह के वैमल्य की तथा प्रीति के उच्छवास की एक निर्मल लीलास्थली है। 10.गोपियों ने निश्छल प्रेम के उच्चतम शिखर को छु लिया है। 11. सूर की यशोदा का सम्पूर्ण व्यक्तित्व कृष्ण स्नेह का प्रतीक है। 'सूरसागर' नारी परित्रों का महान काव्य ग्रंथ है, क्योंकि इस काव्य में मातृ रूप में अभूतपूर्व चित्र, गोपियों, प्रेमिका, कामिनी, पत्नी, बालिका, रानी, ग्वालिन, परस्त्री आदि के विस्तृत वर्णन प्राप्त होते हैं। नन्ददास ने 'मान मंजरी' में मानिनी राधा का वर्णन किया है। 'विरह मंजरी' में एक ब्रजांगना की विरह व्यथा का वर्णन किया है। 'रस मंजरी' में नायिकाओं के अनेक भेदों का रसपूर्ण निरूपण है परमानन्द दास, कुम्मन दास आदि ने सूर की भाँति राधा–कृष्ण की युगल लीला तथा गोपियों की रूपासक्ति और विरहावस्था का हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। ''नारीत्व के प्राणों में मचलती हुई आत्म समर्पण की चिरन्तन दुर्दम्य कामना ही मीरा के प्रणय का मूल उत्स है, मीरा का भाव चिरंतन नारी का भाव है। 12. रसखान, रहीम आदि कवियों ने भी कृष्ण–राधा–गोपियों के प्रेम की विविध मनोदशाओं का सुन्दर चित्रण किया है। रीतिबद्ध कवि केशवदास की 'रसिकाप्रिया' में नायिका के श्रंगार, सौन्दर्य का नखशिख वर्णन है। 'मानस' की त्यागयी, पतिव्रता, आदर्श सीता की अपेक्षा 'रामचन्द्रिका' की सीता राम की प्रिया, रानी तथा जीवनसंगिनी अधिक है। मानस की कौशल्या कठिन परिस्थितियों में भी धैर्यशीला तथा गहन निष्ठा रखने वाली है, जबकि रामचन्द्रिका की कौशल्या मोहमयी होकर सब कर्तव्यों को भुलाकर राम के साथ वन गमन के लिए तैयार है 'मोह चली वन संग लिए' 13. तथा 'औधपुरी यह गाज परै, के अब राज्य भरत्थ करैं' 14. वस्तुतः 'मानस' और 'रामचन्द्रिका' नारी पात्रों का अन्तर तुलसी और केशव की भूमियों में अंतर है। रसिकानुरंजन को ही काव्यों का ध्येय मानने वाले उस युग में केशव ने नारी को भोग्यरूपा मानकर त्याज्य बताता है साथ ही जीवन संगिनी एवं पत्नी के रूप में उसके महत्व को भी स्वीकार किया है। आचार्य चिंतामणि हों या कुलपति मिश्र अथवा मतिराम या देव, सभी रीतिबद्ध कवियों की नारी प्रेम और श्रंगार में डूबी परम्परागत कवियों की श्रंगारकालीन नारी हैं। रीति सिद्ध कवि शिरोमणि बिहारी ने राधा–कृष्ण के पर्यायवाची शब्दों को लेकर नायक और नायिका के प्रेम का चित्रण संयोग एवं वियोग दोनों पक्षों को लेकर सविस्तार किया है। अपने समय की परिस्थितियों के वशीकरण के कारण बिहारी श्रंगार–वर्णन करने के लिए बाध्य थे, फिर भी उन्होंने राज्यश्रम में रहते हुए अपने साहित्यिक व्यक्तित्व को बचाने का भरसक प्रयत्न किया है तथा समाज के उचित मार्गदर्शन के लिए भी भक्तिपरक व नीतिपरक दोहों की रचना की है। रीतिमुक्त कवि सेनापति व पद्माकर की नारी भी अन्य कवियों की भांति वाह्य सौन्दर्य की मूर्ति के रूप में प्रतिष्ठित है। घनानन्द का सम्पूर्ण काव्य श्रंगारिकता से पूर्ण है। भक्ति के भी कुछ छनद आपने लिखे हैं आपकी श्रंगारिकता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कविता के भाव पक्ष पर अधिक बल है। ठाकुर, आलम, बोधा आदि कवियों ने अपने पूर्ववर्ती कवियों की श्रृंगार भावना को ही ग्रहण कर नारी को चित्रित किया। भक्तिकाल की आराध्या राधा रीतिकाल में सामान्य नायिका बन गई।

रीतिकाल में नारी का रसिक रूप ही सर्वत्र मुखरित हुआ है। नारी के दो रूपों स्वकीया व परकीया में से परकीया को ही प्रमुखता दी गई हैं। 15. भारतेन्दु युग की नारी प्रेम की संकुचित सीमा को तोड़कर देश–प्रेम तथा मानव प्रेम की ओर उन्मुख होती है। भारतेन्दु ने 'प्रेम माधुरी' में रीतिकालीन नारी को समक्ष रखकर उसके प्रेम और श्रंगार पक्ष को उभारा है, वहीं 'बालबोधिनी' में नारी को पुरूष के सम देखा है 'जो हरि सोई राधिका, जो शिव सोई शक्ति जो नारि सोई पुरूष, या में कुछ न विभक्ति। श्री बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह, श्री बालमुकुंद गुप्त आदि भारतेंन्दु युगीन कवि नारी के सत्–असत् और परम्परावादी चित्रण के साथ ही उसकी वस्तु स्थिति तथा सुधारवादी दृष्टिकोण पर भी रचनाएं करने लगे थे। यद्यपि इन कवियों की नारी–कल्पना नारी के असहाय, दीन, दुःखी और निराश्रित रूप को ही देख पाई है, तथापि नारी भावना की दृष्टि से वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। द्विवेदी युग में प्रथम बार नारीत्व की उच्च भावना क्रमशः विकसित होती हुई दिखाई देती है। राष्ट्रीयता की भावना और सुधारात्मक दृष्टिकोण के फलस्वरूप राजनीतिक दृष्टि से भी नारी को प्रोत्साहन दिया जाने लगा। पं. श्रीधर पाठक की नारी भावना दृष्टव्य है 'अहो पूज्य–भारत महिलागण, अहो आर्य–कुल प्यारी। अहो आर्य–गृह लक्ष्मी–सरस्वती, आर्य लोक उजियारी। तुम हो शक्ति अजेय विश्व की, आर्य अमोघ बलधारिणी। 16. पंडित रामनरेश त्रिपाठी के 'मिलन' की विजया। 17. और सुमना हो, हरिऔध के प्रिय प्रवास की राधा हो 18. अथवा 'वैदेही वनवास' की सीता हो 19. सभी नारी पात्रों की सृष्टि नारी के समाज सेवी व विश्व कल्याणकारी रूप की प्रतिष्ठित करने के लिए की गई है। 'उद्धव शतक' की गोपियों की प्रिय के प्रति अनन्यता एवं आत्म समर्पण 20. अतुलनीय है। राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त ने उपेक्षिता नारियों को अपने का काव्यों का विषय बनाकर नारी जाति के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किए हैं। उनकी उर्मिला, यशोधरा, उत्तरा, शकुन्तला, हिडिम्बा, द्रौपदी, कुन्ती तथा विष्णुप्रिया आदि नारी पात्रों में नार्योचित त्याग, बल, तप, बलिदान तथा सौन्दर्य करूणा एवं दैन्य की प्रज्जवलित अग्नि में शुद्ध होकर निखरा है। यशोधरा कहती है मेरे दुःख में भरा विश्वसुख क्यों न भरूँ फिर मैं हामी। 21. भारत–भारती में कवि के उद्गार हैं– पाती स्त्रियाँ आदर जहां, रहती वहां सब ऋद्धियां 22. पंडित द्वारिका प्रसार मिश्र, सोहनलाल द्विवेदी सहित द्विवेदी युगीन सभी कवियों ने नारी को शक्ति–रूपा तथा देश प्रेम, समाज प्रेम, विश्व प्रेम आदि अनेक गुणों से युक्त पाया है। प्रसार की श्रद्धा, अनुरक्ति की प्रतिमूर्ति, परोपकारिणी, समाज कल्याण एवं सहिष्णु है 23. प्रसाद की नारी पुरूष की प्रेरणादायिनी शक्ति एवं पथ प्रदर्शिका है। 24. निराला ने नारी की कोमलता, उसकी मुस्कान की आभा और लज्जाशीलता के मार्मिक चित्र खींचे है। 25. वेदना, करुणा, पवित्रता और संयम की मूर्ति 'वह इष्ट देव के मन्दिर की पूजा सी' निराला की 'विधवा' ने पाठकों को सदा द्रवित किया है। प्रकृति के चितेरे पंत ज्योत्सना में स्वर्ण जगत की भावी साम्राज्ञी का रूप तथा 'चिदम्बरा' में मानव की वास्तविक जीवन संगिनी का रूप देखते हैं। 26. पंत की नारी सर्वगुण सम्पन्न, पावन शक्ति व सौन्दर्य की मूर्ति, कल्याण तथा विविध रूपों में स्तुत्या है, तभी तो वह कह उठते हैं ''तुम्हारी सेवा में अनजान हृदय है मेरा अन्तर्ध्यान देवि। माँ! स्हचरी! प्राण! 27. महादेवी की नीर चिरन्तन सुहागिनी के रूप में प्रस्तुत हुई है। 28. वह 'नीर भरी दुख की बदली के समान बनने और मिटने की क्रिया करती रहती है।

महादेवी काव्य में विश्व–नारी के अतृप्त प्रेम, अविकसित राग–भावना की विशुद्ध हृदयानुभूति है। हरिकृष्ण प्रेमी ने गरिमामयी नारी का चित्र खींचा है। 29. सियाराम शरण गुप्त, डॉ. रामकुमारा वर्मा की नारी महान है। माखनलाल चतुर्वेदी की नारी वीरांगना है– 'मेरे प्रणय और प्राणों के ओ सिंदूर रक्तिम लाली तुम कैसे प्रलयंकर शंकर! जे मैं रहूँ न दुर्गा, काली। 30. कलाओं का प्रेरणास्त्रोत बनी दिनकर की नारी शक्तियों से परिपूर्ण है। व्यक्तिगत प्रेम–सौन्दर्यमूलक कविताओं में दिनकर की नारी सुन्दर, संवेदनशील प्रेयसी है। सहज निश्चित भाव से पृथ्वी का सुख भोगने की इच्छा रखने वाली देवलोक से उतरी उर्वशी के माध्यम से दिनकर ने व्यापक धरातल पर प्रेम और सौन्दर्य का विधान किया है। बच्चन के गीतों का विषय मूलतः सौन्दर्य और प्रेम तथा तज्जन्य उल्लास और विषाद की अनुभूति है, जिसकी अभिव्यक्ति में नारी का यथार्थ चित्रण है। नरेन्द्र शर्मा ने एक ओर दोपदी को जीवन शक्ति का प्रतीक माना है नारी नर की शक्ति, शक्ति है जिसकी दुख सहने में, पौरूष की उद्दीप्ती निहित है, नारी के दहने में। तो दूसरी ओर नारी के सौन्दर्य एवं संयोग के मादक चित्र भी खींचे हैं। ''मुझे जगत जीवन का प्रेमी / बना रहा है प्यार तुम्हारा 31. के कवि त्रिलोचन हों या 'कटु यथार्थ से लड़ते–लड़ते अब न लड़ा जाता मुझसे / अब तुम ही थोड़ा मुसका दो / जीने का उल्लास जगा दो 32. के कवि केदारनाथ अग्रवाल, प्रगतिवादी युग के कवियों ने नारी को पुरूष की पूज्या नहीं संगिनी के रूप में देखा है। नागार्जुन ने दाम्पत्य प्रणय के सुन्दर चित्र उकेरे हैं। 'मस्मांकुर' की पार्वती एवं रति दोनों पात्र नारी के मन प्राणों को सहज–साकार करते हैं। 33. 'सिन्दूर तिलकित भाल' में अपनी पत्नी का याद करते हुए नागार्जन मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को जीवत बनाते हैं। प्रयोगवाद एवं नई कविता के विशिष्ट कवि अज्ञेय एक ओर नारी को प्रेरित करने वाली महाशक्ति के रूप में देखते हैं तो दूसरी ओर उसे वासना पूर्ति का साधन मात्र मानते हैं। 34. धर्मवीर भारती की 'कनु प्रिया' में राधाा के प्रेम संवेदन के माध्यम से जीवन को समझाने का एक प्रयत्न है। दुष्यन्त की कविता में नारी के साथ आधुनिक संघर्ष तीखेपन के साथ उजागर हुआ है ''कब तक जिएगा / काव्य बन कर तुम्हारा दर्द / मेरे पास? सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'सुहागिन का गीत' में नारी अपनी संस्कृति का पोषिका है। नरेश मेहता ने पौराणिक नारी पात्रों को नई भाव–भूमि के साथ स्तुत किया है। 35. लीलाधर जगूड़ी नारी के मातृ रूप को पूरी गरिमा के साथ प्रस्तुत करते है 'बल्कि माँ उस चीख का नाम है / जो आंसुओं के कीचड़ को जमीन की तरह सख्त बना देती है। 36. हिन्दी काव्य में जो नारी दया, ममता, माया, करूण, त्याग की देवी जैसे विशेषणों में दब कर अपने वास्तविक रूप में नहीं आ सकी थी, वह आगे बढ़ने के लिए संघर्ष रत रही तथा समकालीन कविता में उसका यह संघर्ष सक्रियता लिए हुए है। अब नारी के माँ बहिन, पत्नी आदि अनेक रिश्तों की जटिल बुनावट के समझने की चेष्टा हुई है। उदय प्रकाश की 'नीव की ईंट हो दीदी' में दीदी भीतर की इच्छाओं को काठ बनाकर स्वयं 'ढिबरी' की तरह जल कर थोड़ी सी कठिन रोशनी में अपने भाई–बहनों का आश्रय बनती है। उसके चरित्र की यह उदात्तता पूजा के लिए नहीं, वरन संकल्प लेने के लिए प्रेरित करती है, जुझने की दृढ़ता पैदा करती है। 'फिरकनी सी खटती माँ' (राजेश जोशी) का ममता एवं विश्वास भरा चित्र देखने योग्य है। 38. ऋता शुक्ल माँ के जीवन की मार्मिक अभिव्यंजना करती है ''कलुष नहीं / छद्म नहीं / धैर्य, क्षमा निस्पृहता / उज्जवलता तुलसी के चोरे

का दीप बनी। वह मेरी माँ थी।'' 39. आज की कविताओं में जीवन संघर्षों की ज्योति से दीप्त स्त्री–चित्र अपनी विश्वसनीयता में आकर्षित करते हैं। 40. आजकल नारी को लेकर उसके ऊपर हो रहे अमानवीय उत्पीड़न, सामंती रवैये पर तीखी चोट की जा रही है। गोरख पाण्डेय की संवेदना एवं मानवीय भाव–क्रोध दृष्टव्य है– ''नारी कानूनन समान है/वह स्वतंत्र भी है/बड़े–बड़े की नजरों में तो/धन का एक यंत्र भी है'' लेकिन नहीं ''भूले रहे वे/सबके ऊपर वह मनुष्य है/उसे चाहिए प्यार/चाहिए खुली हवा। 41. स्पष्ट है कि आज की कवि–दृष्टि चारित्रिक दृढ़ता, जुझारूपन एवं अपना रास्ता खुद तय करने की जीवटता लिए नारी की सृष्टि पर लगी है। एक बात ध्यावत है कि नारी के प्रति कवियों की दृष्टि सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक स्थितियों में परिवर्तन होने के साथ–साथ बदलती रही है।

सन्दर्भ

1. क्ला और संस्कषति – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, पृष्ठ–205
2. आधुनिक हिन्दी काव्य में नारी भावना डॉ. शैल कुमारी पृ–13. पृथ्वी राज रासो चन्दवरदायी, पृ–147
3. हिन्दी संत साहित्य – डॉ. त्रिलोकी नाथ दीक्षित, पृ०–15
4. दादूदयाल की बानी (16–41)
5. गरीबदास की बानी–(1924)पृ0–103–53
6. जायसी ग्रन्थावली–जायसी पृ0–199
7. चित्रावली – उस्मान पृ0–223–224
8. रामचरितमानस (बालकाण्ड)–तुलसीदास पृ0–256 10– भारतीय वाङन्य में श्री राधा–डॉ. बलदेव उपाध्याय, पृ0–421
9. सूरसागर–नागरी प्रचारिणी सभा, पद सं. 1278
10. मीराबाई – डॉ. सी.एल. प्रभात पृ0–390
11. रामचन्द्रिका केशवदास पूर्वार्द्ध छन्द 10, पृ0–163
12. वही, पृ0–163
13. हिन्दी काव्य में नारी – डॉ. बल्लभदास तिवारी, पृ0–485
14. आर्य महिला श्री धर पाठक, पृ0–160
15. मिलन–श्री रामनरेश त्रिपाठी, सर्ग 2. सर्ग 4
16. 'प्रियप्रवास' – हरिऔध 17/49
17. वैदेही वनवास– हरिऔधस, सर्ग 2/42 20– उद्धव शतक–रत्नाकर, छनद 26, 33, 94, 95, 96
18. यशोधरा – मैथिली शरण गुप्त, पृ–147
19. भारत – भारती मैथिली शरण गुप्त, पृ–136
20. कामायनी प्रसाद (दर्शन) पृ0–249

21. कामायनी प्रसाद, (श्रद्धा), पृ0—49 50 तथा 111
22. परिमल निराला, (बहू), पृ0—134
23. गीतिका — निराला, पृ0—38—41
24. चिदंबरा — पंत, (नारी), पृ0—95
25. पल्लव—पंत, (नारी रूप), पृ0—119
26. सांध्यगीत — महादेवी वर्मा, पृ0—51
27. 'किया विधाता ने तुमको रचकर अपना ही स्वरूप विस्तार अपना चमत्कार मायाविनि दिया तुझे उसने उपहार'—जादूगरनी—हरिकष्ण प्रेमी. पष्—3 30— हिमकिरीटनी'— माखनलाल चतुर्वेदी, पृ0—139
28. स्मकालीन कविता की प्रवष्त्तियां—डॉ. रामकली सराफ, पृ0—33
29. हे मेरी तुम — केदारनाथ अग्रवाल, पृ0—68
30. भस्मांकुर — नागार्जुन पष्—43/130, 150, पृ0—49/240,250
31. आह मेरा श्वास है उत्तपत / धमनियों में उमड़ आई है लहू की धार/प्यार है अभिशप्त/तुम कहाँ हो नारि—सावन मेघ (तार सप्तक) अज्ञेय, पृ0—282
32. महाप्रस्थान नरेश मेहता, पृ0— 60,66
33. बची हुई पष्थ्वी, किसी ने मुझे देखा— लीलाधर जगूड़ी, पृ0—65—66
34. नींव की ईंट हो तुम दीदी (अबूतर—कबूतर) उदय प्रकाश पष्—13 38— एक दिन बोलेंगे पेड़— माँ कहती है राजेश जोशी, पृ0—12
35. वह मेरी माँ थी — ऋता शुक्ल, साहित्य अमृत मई 2002 से उद्धृत, पृ—15
36. समकालीन कविता की प्रवष्त्तियां—डॉ. रामकली सराफ, पृ0—275—276
37. जागते रहो सोने वाले, बंद खिड़कियों से टकराकर—गोरख पाण्डेय, पृ0—20